श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 42, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज गुरूवार, 17 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

चीन से तनाव के बीच बोफोर्स तोपों को तैयार करने में जुटी भारतीय सेना, लद्दाख में होगी तैनाती

लद्दाख, एएनआइ। पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीन से जारी तनाव के बीच भारतीय सेना किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए अपनी तैयारियों को धार देने में जुटी हुई है। भारतीय सेना ने अब बोफोर्स होवित्जर तोपों को तैयार करना शुरू कर दिया है। समाचार एजेंसी एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक, लद्दाख में सेना के इंजीनियर 155 की इन तोपों की सर्विसिंग कर रहे हैं।

इन तोपों को आर्टिलरी रेजिमेंट में 1980 के दशक के मध्य में शामिल किया गया था। ये तोपें लो एंड हाई दोनों एंगल से फायरिंग करने में सक्षम हैं। इनकी सर्विसिंग का काम पूरा होने के बाद इन्हें लद्दाख में तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही भारतीय वायु सेना लद्दाख की अग्रिम चौकी तक जरूरी सामग्री पहुंचाने का काम कर रही है। सर्विसिंग के काम में जुटे इंजीनियरों ने कहा कि कुछ ही दिनों में ये तोपें सीमा पर गर्जने के लिए तैयार हो जाएंगी।

अधिकारियों ने बताया कि इन तोपों को समय-समय पर सर्विसिंग और मेंटनेंस की जरूरत होती है। इसके लिए बकायदा टेक्नीशियंस को तैनात किया गया है। इस तोप ने कारगिल युद्ध के दौरान पूरे युद्ध का रुख बदल दिया था। इन तोपों ने जम्मू-कश्मीर के द्रास में ऑपरेशन विजय की लड़ाइयों को जीतने में बड़ी भूमिका निभाई थी। वर्कशॉप में तैनात इंजीनियरों पर आपात स्थितियों में तेजी से इन हथियारों को संचालन के लायक बनाने की जिम्मेदारी होती है।

ऊंचाई पर बैठे दुश्मनों को मार गिराने में इस तोप का कोई तोड़ नहीं है। वर्कशॉप को टैंक की फायरिंग पिन से लेकर इंजन असेंबल तक सब कुछ मुहैया कराना होता है। उल्लेखनीय है कि मौजूदा वक्त में सीमा पर चीन की आक्रामकता को देखते हुए भारतीय सेना ने अपनी तैनाती भी बढ़ाई है। बीते 20 दिनों में भारत और चीन के बीच उत्तरी पैंगोंग झील के पास फायरिंग की कम से कम तीन घटनाएं हुई हैं। यही नहीं इस दौरान दोनों पक्षों के बीच 100-200 राउंड हवाई फायरिंग भी हुई है।

अयोध्या विवादित ढांचा विध्वंस केस में 30 सितंबर को आएगा फैसला

सभी आरोपितों को मौजूद रहने का आदेश

लखनऊ, जेएनएन। अयोध्या में छह दिसंबर, 1992 में विवादित ढांचा विध्वंस मामले में सीबीआई की अदालत 27 साल बाद फैसला सुनाएगी। तब इस मामले में कुल 50 एफआइआर दर्ज हुई थी। तीन जांच एजेंसियों ने मिलकर इसकी विवेचना की। सीबीआई के विशेष न्यायाधीश एसके यादव 30 सितंबर को विवादित ढांचा विध्वंस मामले में फैसला सुनाएंगे। सीबीआइ ने कई चरणों में आरोपपत्र दाखिल कर अभियोजन पक्ष को साबित करने के लिए 994 गवाहों की सूची अदालत में दाखिल की। इसमें विचारण के दौरान 354 गवाह पेश किए गए। मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश सुरेंद्र कुमार यादव ने फैसले के दिन सभी आरोपितों को अदालत में उपस्थित होने के निर्देश दिए हैं।

अयोध्या के विवादित ढांचा विध्वंस केस में पूर्व उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रहे लाल कृष्ण आडवाणी, पूर्व राज्यपाल और यूपी के सीएम रहे कल्याण सिंह, भाजपा नेता विनय कटियार, पूर्व केंद्रीय मंत्री और मध्य प्रदेश की सीएम रहीं उमा भारती आरोपी हैं। सीबीआई ने इस मामले में 49 आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट फाइल की थी, जिसमें से 17 लोगों की मौत हो चुकी है। यानी इस समय विशेष अदालत में 32 आरोपितों के विरुद्ध विचारण हो रहा है, जबकि 17 आरोपियों की मृत्यु हो चुकी है। सीबीआई के वकील ललित सिंह ने बताया कि अदालत ने बचाव पक्ष और अभियोजन पक्ष की दलीलें सुनने के बाद एक सितंबर को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

कई लोगों ने दर्ज कराई थी एफआइआर : अयोध्या में विवादित ढांचा विध्वंस मामले से जुड़े अधिवक्ता केके मिश्र ने बताया कि अयोध्या ढांचा ध्वंस मामले की पहली रिपोर्ट (197/92) इंस्पेक्टर रामजन्मभूमि प्रियंवदा नाथ शुक्ला ने थाना रामजन्मभूमि में 40 लोगों को नामजद करते हुए लाखों अज्ञात कारसेवकों के खिलाफ दर्ज कराई थी। इसी दिन दूसरी रिपोर्ट (198/92) चौकी इंचार्ज राम जन्मभूमि जीपी तिवारी ने अज्ञात कारसेवकों के खिलाफ दर्ज कराई थी। इसके अलावा 48 रिपोर्टें मीडिया कर्मियों की ओर से दर्ज कराई गईं।

इनके खिलाफ दाखिल हुआ था आरोपपत्र : अयोध्या में विवादित ढांचा विध्वंस मामले की जांच कर रही सीबीआइ ने अपराध संख्या 197/92 की विवेचना करते हुए 40 आरोपितों के विरुद्ध चार अक्टूबर 1993 को विशेष अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (अयोध्या प्रकरण) लखनऊ के समक्ष आरोपपत्र दाखिल किया। इसमें बालासाहेब ठाकरे, लालकृष्ण आडवाणी, कल्याण सिंह, अशोक सिंहल, विनय कटियार, मोरेश्वर सावे, पवन पांडे, बृजभूषण शरण सिंह, जय भगवान गोयल, उमा भारती, साध्वी ऋतंभरा, महाराज स्वामी साक्षी, सतीश प्रधान, मुरली मनोहर जोशी, गिरिराज किशोर, विष्णु हरि डालमिया, विनोद कुमार वत्स, रामचंद्र खत्री, सुधीर कक्कर, अमरनाथ गोयल, संतोष दुबे, प्रकाशशर्मा, जय भान सिंह पवैया, धर्मेंद्र सिंह गुर्जर, राम नारायण दास, रामजी गुप्ता, पूर्व विधायक लल्लू सिंह, चंपत राय बंसल, ओम प्रकाश पांडे, लक्ष्मी नारायण दास महा त्यागी, विनय कुमार राय, कमलेश त्रिपाठी, गांधी यादव, हरगोविंद सिंह, विजय बहादुर सिंह, नवीन भाई शुक्ला, रमेश प्रताप सिंह, आचार्य धर्मदेव, आरएन श्रीवास्तव एवं देवेंद्र बहादुर राय को आरोपित बनाया गया था।

देश में कोरोना संक्रमण की रफ्तार थम नहीं रही, संक्रमितों का आंकड़ा 51 लाख के पार

जेएनएन, नई दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण की रफ्तार थम नहीं रही है। बुधवार को 98 हजार से अधिक नए मामले सामने आए। दूसरी बार एक दिन में सबसे अधिक नए केस मिले हैं। इससे पहले नौ सितंबर को सबसे अधिक एक लाख चार हजार से अधिक नए केस मिले थे। हालांकि, बीते 24 घंटों में रिकॉर्ड 85 हजार से अधिक मरीजों को देश के विभिन्न अस्पतालों से छुट्टी भी मिली है, जबकि इस दौरान 1,132 लोगों की जान भी इस कोरोना महामारी के चलते चली गई है। सक्रिय मामलों की संख्या भी 10 लाख को पार कर गई है।

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से रात नौ बजे तक मिले आंकड़ों के मुताबिक, मंगलवार देर रात से अब तक 98,070 नए मामले सामने आए हैं और कुल संक्रमितों का आंकड़ा 51 लाख चार हजार से अधिक हो गया है। एक दिन पहले ही कुल मामले 50 लाख से अधिक हुए थे। 85,747 मरीज ठीक भी हुए हैं और अब तक कोरोना से ठीक होने वाले लोगों की संख्या 40.11 लाख से अधिक हो गई है। मरीजों के स्वस्थ होने की दर 78 फीसद को पार कर गई है। इस महामारी के चलते जान गंवाने वालों का आंकड़ा भी 83,121 हो गया है। पहली बार सक्रिय मामलों की संख्या 10 लाख से अधिक हुई है।

महाराष्ट्र में दो दिन बाद फिर नए मामले बढ़ गए हैं। राज्य में 23,365 नए मामलों के साथ संक्रमितों का आंकड़ा 11 लाख 21 हजार से अधिक हो गया है। 474 मौतें के साथ मरने वालों की संख्या भी 30,883 हो गई है। हालांकि, 7.92 लाख लोग ठीक भी हो चुके हैं और सक्रिय मामले सिर्फ 2.97 लाख ही रह गए हैं। गोवा में 628 नए मामले मिले हैं और चार लोगों की जान गई है। राज्य में कुल मामले 26 हजार से अधिक हो गई है और अब तक 319 लोगों की जान जा चुकी है।

दक्षिण भारत में कोरोना के प्रकोप में कुछ राहत मिली है। केरल को छोड़कर लगभग सभी राज्यों में नए मामलों में कमी आई है। केरल में रिकॉर्ड 3,830 नए केस मिले हैं और कुल संक्रमितों का आंकड़ा 1.17 लाख के पार पहुंच गया है। तमिलनाडु में लगातार 11वें दिन नए मामलों से ज्यादा मरीज ठीक हुए हैं। राज्य में 5,652 नए केस मिले हैं और 5,768 मरीज ठीक हुए हैं। अब तक सामने आए 5.19 लाख संक्रमितों में से 4.64 लाख मरीज ठीक हो चुके हैं। 8,559 लोगों की जान भी जा चुकी है। आंध्र प्रदेश में 8,835 नए केस मिले हैं और 10,843 मरीज ठीक हुए हैं। संक्रमितों का आंकड़ा 5.92 लाख और ठीक हुए लोगों की संख्या 4.97 लाख हो गई है। 5,105 मरीजों की जान जा चुकी है। तेलंगाना में 2,257 नए मामलों के साथ 1.62 लाख संक्रमित सामने आ चुके हैं। पुडुचेरी में 518 नए केस मिले हैं और 13 लोगों की मौत हुई है।

गुजरात में पिछले कुछ दिनों से लगातार नए मामले बढ़ रहे हैं। हालांकि, ठीक होने वाले मरीजों की संख्या भी ज्यादा है। बुधवार को राज्य में 1,364 नए मामले सामने आए तो 1,447 मरीजों को अस्पताल से छुट्टी भी मिली। अब कुल 1.17 लाख संक्रमित मिल चुके है, जिनमें से 98 हजार से अधिक ठीक भी हो चुके हैं। कुल 3,259 लोगों की अब तक मौत हुई है। पूर्वोत्तर के राज्यों में सबसे गंभीर स्थिति असम और त्रिपुरा में बनी हुई है। इन दोनों ही राज्यों में प्रतिदिन बड़ी संख्या में नए केस मिल रहे हैं। अब तक त्रिपुरा में 20 हजार से अधिक और असम में डेढ़ लाख के करीब मरीज सामने आ चुके हैं।

संशोधित पीडब्लू इंजनों वाले विमान ही उड़ाएं इंडिगो और GoAir : डीजीसीए

नई दिल्ली, प्रेट्र। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने इंडिगो और गोएयर को सिर्फ उन्हीं विमानों को उड़ान भरने की अनुमति देने के लिए कहा है जिनमें संशोधित प्रैट एंड व्हिटनी (मॉडिफाइड पीडब्लू) इंजन लगे हैं। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को यह जानकारी दी.इंडिगो और गोएयर के पीडब्लू इंजन वाले ए320 नियो विमानों के बेड़े में 2016 से ही उड़ान के दौरान और जमीन पर लगातार खराबियां आ रही थीं। पुरी ने ट्विटर पर बताया कि इंडिगो के पास 134 ए320 नियो और ए321 नियो विमान हैं और सभी में संशोधित पीडब्लू इंजन लग गए हैं। गोएयर के पास 46 ए320 नियो विमान है और 30 में संशोधित पीडब्लू इंजन लग गए हैं। सभी घरेलू एयरलाइनों के सुरक्षा तंत्र की समीक्षा और मूल्यांकन की कवायद के तहत डीजीसीए ने मंगलवार से इंडिगो और विस्तारा एयरलाइंस की सेफ्टी ऑडिट शुरू की। इससे पहले स्पाइस जेट और एयर इंडिया की सेफ्टी ऑडिट पूरी की जा चुकी है।

सपा सांसद जया के बयान के बाद बढ़ाई गई बच्चन परिवार के तीनों बंगलों की सुरक्षा

राज्य ब्यूरो, मुंबई। राज्यसभा में सपा सांसद जया बच्चन के बयान पर छिड़ी बहस के बाद मुंबई में बच्चन परिवार के बंगलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। मंगलवार को जया बच्चन ने भाजपा सांसद और भोजपुरी फिल्मों के अभिनेता रविकिशन के बयान के जवाब में अपना बयान दिया था। रविकिशन ने लोकसभा में सोमवार को देश के युवाओं में ड्रग्स की बढ़ती लत का जिक्र करते हुए कहा था कि हमारा फिल्मोद्योग भी इससे प्रभावित है।

वहीं मंगलवार को राज्यसभा में जया बच्चन ने कंगना रनोट और रविकिशन का नाम लिए बिना फिल्मोद्योग के ड्रग्स की लत से प्रभावित होने के आरोप का खुलकर विरोध किया था। उन्होंने कहा था कि कुछ लोग जिस थाली में खाते हैं, उसी में छेद करते हैं। यह गलत है। जया के अनुसार जिन लोगों ने फिल्म इंडस्ट्री से नाम कमाया, अब वे इसे गटर बता रहे हैं। मैं इससे बिल्कुल सहमत नहीं हूं।

वरिष्ठ अभिनेत्री जया बच्चन के इस बयान के बाद से कई तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। लोग ट्विटर-फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनके विरोध और समर्थन दोनों में प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। इन माध्यमों पर उनके परिवार के तरह-तरह के चित्र भी डाले जा रहे हैं। दूसरी ओर फिल्म उद्योग का एक वर्ग उनकी तारीफ कर रहा है।

लोगों की प्रतिक्रियाओं को देखते हुए बच्चन परिवार के जुहू स्थित बंगलों की सुरक्षा एवं निगरानी बढ़ा दी गई है। एक पुलिस अधिकारी के अनुसार जया के पति अमिताभ बच्चन को पहले से एक्स श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त है। अब उनके तीनों बंगलों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। बता दें कि मुंबई के जुहू क्षेत्र में अमिताभ बच्चन के तीन बंगले जलसा, प्रतीक्षा एवं जनक हैं। जलसा और प्रतीक्षा में बच्चन परिवार रहता है। जबकि जनक का इस्तेमाल कार्यालय के रूप में किया जाता है।

बच्चन परिवार के बंगलों की सुरक्षा बढ़ाए जाने पर भाजपा ने सवाल उठाए हैं। भाजपा विधायक अतुल भातखलकर ने महाराष्ट्र सरकार को पक्षपाती करार देते हुए कहा है कि इससे यह स्पष्ट हो गया है कि ठाकरे सरकार के सुर में सुर मिलाने के कारण उनकी (बच्चन परिवार की) सुरक्षा बढ़ाई जा रही है, लेकिन यह तत्परता सुशांत प्रकरण और कंगना के मामले में कतई नहीं दिखाई पड़ी।

ट्विटर पर सक्रिय कंगना रनोट ने अब एक यूजर के ट्वीट का जवाब देते हुए जया बच्चन पर निशाना साधा है। बुधवार को एक यूजर ने लिखा कि जया जी चार-पांच परिवारों की झूठन को पूरी इंडस्ट्री की थाली समझ बैठी हैं आप? कंगना ने खुद की थाली परोसी और अपनी थाली दांव पर लगाते हुए वो ड्रग्स की थालियों को साफ करवा रही है तो दिक्कत क्यों? इस पर कंगना ने जवाब देते हुए लिखा, कौन सी थाली दी है जयाजी और उनकी इंडस्ट्री ने? एक थाली मिली थी, जिसमें दो मिनट के रोल, आइटम नंबर्स और एक रोमांटिक सीन मिलता था, वो भी हीरो के साथ सोने के बाद। मैंने इस इंडस्ट्री को फेमिनिजम सिखाया, थाली देशभक्ति, नारीप्रधान फिल्मों से सजाई, यह मेरी अपनी थाली है, जयाजी आपकी नहीं।

नितिन गडकरी हुए कोरोना पॉजिटिव

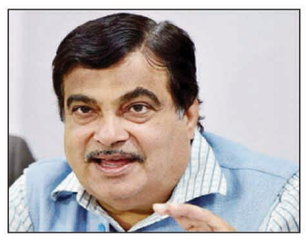

नई दिल्ली, एएनआइ। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भी कोरोना वायरस से संक्रमित हो गए हैं। गडकरी ने ट्वीट कर ये जानकारी दी है। गडकरी ने ट्वीट कर बताया कि वह मंगलवार से कमजोरी महसूस कर रहे थे, जिसके बाद उन्होंने डॉक्टर से संपर्क किया। जांच के दौरान मेरी कोरोना वायरस संक्रमण की जांच पॉजिटिव आई। बता दें कि इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह के अलावा कई अन्य मंत्री और नेता भी कोरोना वायरस संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं। भारत में कोरोना वायरस संक्रमण तेजी से फैल रहा है और कुल संक्रमितों की संख्या 50 लाख के पार पहुंच गई है। हालांकि, देश में रिकवरी रेट भी लगातार बढ़ रहा है और लोग तेजी से ठीक हो रहे हैं। गडकरी ने ट्वीट में लिखा- मैं कल (मंगलवार) से कमजोरी महसूस कर रहे था। इसके बाद डॉक्टर से संपर्क किया। जांच के दौरान मेरी कोरोना वायरस संक्रमण की जांच पॉजिटिव आई है। मैं इस समय सभी के अशीर्वाद और शुभकामनाओं के साथ अच्छा महसूस कर रहा हूं। मैंने खुद को आइसोलेट कर लिया है। इसके साथ ही मैं उन सभी लोगों से अनुरोध करता हूं, तो मेरे संपर्क में आए हैं, वे सावधान रहें और प्रोटोकॉल का पालन करें। सुरक्षित रहें।बता दें कि कोरोना काल में भी केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी विभिन्न परियोजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाने में जुटे हुए थे। 11 सितंबर को ही उन्होंने बिहार में चल रही परियोजनाओं की समीक्षा बैठक की थी। इस वर्चुअल बैठक में बिहार के सड़क निर्माण मंत्री नंद किशोर यादव और केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह और केंद्र व राज्य सरकार के अधिकारी भी उपस्थिति थे।

रोज वार्ता कर बनाया जाएगा नगा समझौते को लागू करने का रास्ता

सरकार की ओर से शामिल होंगे दो अधिकारी

नई दिल्ली, पीटीआइ। उत्तर-पूर्व की दशकों पुरानी नगा समस्या के समाधान के लिए हुए समझौते को लागू करने के वास्ते सरकार और एनएससीएन-आइएम के शीर्ष नेताओं के बीच रोजाना वार्ता होगी। बैठक में केंद्र सरकार की ओर से इंटेलीजेंस ब्यूरो के दो वरिष्ठ अधिकारी भाग लेंगे। नगालैंड के राज्यपाल और सरकार की ओर नियुक्त वार्ताकार आरएन रवि फिलहाल इस बैठक से दूर हैं। एनएससीएन-आइएम नेताओं ने आरोप लगाया था कि ये दोनों उनके बीच फूट डालने का प्रयास कर रहे हैं। यह वार्ता तीन अगस्त, 2015 को हुए समझौते को लागू करने के लिए हो रही है। एनएससीएन-आइएम की मांग है कि नगालैंड के लिए अलग संविधान और अलग झंडे का प्रावधान किया जाए। लेकिन इन दोनों मांगों पर अभी कोई फैसला नहीं हुआ है। इस सहित कुछ और मांगों पर फैसला होने के बाद नगा संगठन केंद्र सरकार के राजनीतिक लोगों से वार्ता करेगा। केंद्र सरकार और एनएससीएन-आइएम के बीच 18 साल चली 80 चरणों की वार्ता के बाद तीन अगस्त, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में समझौता हुआ था।

समझौते पर केंद्र सरकार की ओर से नियुक्त वार्ताकार आरएन रवि और नगा संगठन के महासचिव थुइंगालेंग मुइवा ने दस्तखत किए थे। ज्ञात हो, पांच अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर उसे दिया गया विशेष संवैधानिक दर्जा खत्म किया गया था। इस विशेष दर्जे के चलते जम्मू-कश्मीर के लिए अलग झंडे का भी प्रावधान था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह कई मौकों पर एक देश में एक संविधान और एक झंडा होने की बात कह चुके हैं, इसलिए नगा नेताओं की अलग संविधान और अलग झंडे की मांग माने जाने को लेकर संदेह है।

सीजेआई ने कहा- कोई यह कह कर हाईकोर्ट जज नहीं बन सकता कि मैं हाईकोर्ट जज बनना चाहता हूं

सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के सात न्यायिक अधिकारियों की ओर से दाखिल याचिका को विचारार्थ स्वीकार करते हुए नोटिस जारी किया है।

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को न्यायिक अधिकारियों की याचिका पर सुनवाई करते हुए टिप्पणी में कहा कि यह तो बहुत अनुचित है कि कोई याचिका दाखिल कर कहे कि मुझे हाईकोर्ट जज बनाओ। हालांकि कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के सात न्यायिक अधिकारियों की ओर से दाखिल याचिका को विचारार्थ स्वीकार करते हुए नोटिस जारी किया है।

बुधवार को उत्तर प्रदेश के सात न्यायिक अधिकारियों की ओर से दाखिल की गई याचिका मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे, एएस बोपन्ना और वी. राम सुब्रामण्यम की पीठ के समक्ष सुनवाई पर लगी थी। याचिका में न्यायिक अधिकारियों ने सुप्रीम कोर्ट कोलिजियम द्वारा उन्हें हाईकोर्ट जज बनाने पर पुनर्विचार का आग्रह किया है। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायिक अधिकारियों की याचिका विचारार्थ स्वीकार करते हुए याचिका में प्रतिपक्षी बनाए गए सुप्रीम कोर्ट के प्रशासनिक छोर पर सिकरेट्री जनरल को, केन्द्र सरकार और एक अन्य न्यायिक अधिकारी को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब दाखिल करने को कहा है।

याचिका पर नोटिस जारी करने के बाद मुख्य न्यायाधीश एसए बोबडे ने मौखिक टिप्पणी में कहा कि कोई यह कह कर हाईकोर्ट जज नहीं बन सकता कि मै बनना चाहता हूं। जस्टिस बोबडे ने कहा कि आजकल ये नया चलन शुरू हुआ है। मुझे नहीं लगता कि कोई आए और कहे कि मुझे हाईकोर्ट जज बनाओ। आप यह कह कर हाईकोर्ट जज नहीं बन सकते कि मै हाईकोर्ट जज बनना चाहता हूं। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि उन्हे यह बहुत अनुचित लगता है कि कोई रिट याचिका दाखिल करके हाईकोर्ट जज बनाने की मांग करे।

याचिका दाखिल करने वाले सात न्यायिक अधिकारियों में एक न्यायिक अधिकारी सेवानिवृत हो चुके हैं। बाकी के छह न्यायिक अधिकारी अभी नौकरी में हैं। न्यायिक अधिकारियों की याचिका में आग्रह किया गया है कि कोलीजियम उनके नामों पर पुनर्विचार करे। कहा गया है कि हाईकोर्ट कोलिजियम ने हाईकोर्ट पदोन्नत करने के लिए उनके नामों की सिफारिश की थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट कोलिजियम ने गत 14 अगस्त को उनमें से सिर्फ एक न्यायिक अधिकारी को ही पदोन्नति देने का प्रस्ताव मंजूर किया।

केंद्रीय कार्मिक मंत्री ने कहा- केंद्रीय कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति की उम्र में बदलाव का प्रस्ताव नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय कार्मिक राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह ने बुधवार को लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित जवाब में बताया कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति की उम्र में बदलाव का कोई प्रस्ताव नहीं है। सवाल पूछा गया था कि क्या अधिकतम 30 साल की सेवा अवधि पूर्ण होने के बाद केंद्र व राज्य सरकारों के कर्मचारियों को सेवानिवृत्त करने का प्रस्ताव है? चीन मुद्दे की संवेदनशीलता को देखते हुए सरकार ने संसद में इसकी चर्चा जरूर खारिज कर दी, लेकिन कांग्रेस नहीं चूकेगी। भारत-चीन सीमा पर बीते छह महीने के दौरान घुसपैठ की कोई घटना नहीं होने के राज्यसभा में गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय के लिखित जवाब को लेकर सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरते हुए पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि आखिर पीएम चीन से इतने भयभीत क्यों हैं?

राहुल ने अमेरिका से अपने ट्वीट में इस बयान के घटनाक्रमों को समझे जाने की जरूरत बताते हुए कहा 'प्रधानमंत्री बोले कि कोई सीमा में नहीं घुसा। फिर चीन स्थित बैंक से भारी कर्जा ले लिया। रक्षामंत्री ने कहा कि चीन ने देश में अतिक्रमण किया। अब गृह राज्यमंत्री ने कहा अतिक्रमण नहीं हुआ। मोदी सरकार भारतीय सेना के साथ है या चीन के साथ। इतना डर किस बात का? 'राहुल के बाद कांग्रेस मीडिया विभाग के प्रमुख रणदीप सुरजेवाला ने पूर्वी लद्दाख में चीनी घुसपैठ का संसद में जवाब देने से बचने का प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया। उनका कहना था कि पीएम देश की सुरक्षा के इस सबसे अहम मोर्चे पर अपनी विफलता छुपाने के लिए संसद में चीन के मुद्दे पर चर्चा से भाग रहे हैं। उन्होंने सरकार से संसद में यह साफ बताने की मांग की कि चीन ने भारतीय सरजमीं पर कब्जा जमा रखा है या नहीं। साथ ही इस बारे में भी जानकारी दी जाए कि डेपसांग, गोगरा, पैंगोंग त्सो लेक में फिंगर आठ तक, वाई जंक्शन भूटान में, उत्तराखंड में लिपुलेख और अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर चीनी सैनिकों ने अतिक्रमण का दुस्साहस किया है या नहीं। प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री संसद को इससे भी अवगत कराएं कि चीन ने इस दौरान भारत की कितनी जमीन पर कब्जा कर रखा है।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज गुरूवार, 17 सितम्बर, 2020

संक्षेप समाचार

भारतीय किसान कल्याण संघ की हुई बैठक

करछना। मुगारी स्थित उर्मिला इंटरनेशन स्कूल में बुधवार को भारतीय किसान कल्याण संघ की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कृषि विभाग के अवकाश प्राप्त अधिकारी प्रगतिशील किसान वासुदेव यादव ने की। इस दौरान करछना क्षेत्र के कई गांवों से आये हुए संघ के ग्राम प्रतिनिधि और ब्लाक पदाधिकारियों द्वारा किसानों के हित में कई मुद्धे उठाये गये। खरीफ की फसलों पर लगातार आवारा पशुओ के आंतक के चलते किसानो का दर्द उठाते हुए पदाधिकारियो ने सरकार से इसके निदान की माग उठाई।केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार द्धारा किसानों के दो लाख तक ऋण माफी सहित कई समस्याओ पर बैठक के दौरान चर्चा की गई।सचालन धर्मेन्द्र मिश्रा ने किया। इस मौके पर संयोजक पवनेश उपाध्याय, जर्नादन सिंह, एसबी सिंह, मनोज उपाध्याय, नरेन्द्र बहादुर सिह विनय सिह लाल बहादुर सिंह, लालजी देवबंशी सहित कई संगठन के लोग और किसान मौजूद रहे।

कोयला व्यवसाई को बदमाशों ने मारी गोली, गंभीर

फूलपुर। दुकान बंद कर घर जा रहे कोयला व्यवसाई को घात लगाए बदमाशों ने गोली मारकर फरार हो गए। गोली की आवाज सुन आसपास के व्यापारी दौड़े व परिजनों को सूचना देते हुए घायल व्यवसाई को स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जहां स्थिति चिंताजनक बनी हुई है।

सरायइनायत थाना क्षेत्र के सहसों स्थित लाला बाजार के समीप बाइक सवार बदमाशों ने कोयला ब्यवसायी को गोली मारकर भाग निकले। गंभीरावस्था में घायल ब्यवसायी को इलाज के लिए एसआरएन में भर्ती कराया गया है। जहां उसकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। थरवई थाना क्षेत्र के कांदी गांव निवासी रमेश कुमार सिंह 45 वर्ष पुत्र संगम लाल सहसों चौराहें पर कोयला की दुकान चलाता है। बुधवार को वह सायंकाल छः बजे के करीब दुकान बंद कर अपनी बुलट मोटर साइकिल से घर जा रहा था। वह कांदी रोड़ के समीप एक दूकान पर रूककर चाय पिया और पान खाने के लिए जैसे ही दुकान पर पहुंचा।पहले से घात लगाये बदमाशों ने उसे गोली मार दी। गोली मारने के बाद अपाचे सवार दोनो बदमाश शहर की ओर भाग निकले। गोली चलने से अफरा-तफरी मच गई। आसपास की दुकानों के शटर गिर गये। घटना की जानकारी पाकर रोते विलखते परिजन भागकर मौके पर पहुंचे।और निजी वाहन से खून से लथपथ रमेश को इलाज के लिए स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसकी हालत गंभीर बतायी जा रही है। सूचना पर पहुंचे एसएसपी प्रयागराज थाना प्रभारी सराय इनायत संजय कुमार द्विवेदी तथा चौकी प्रभारी सहसों भीष्म नारायण सिंह सहित काफी पुलिस बल मौके पर पहुंचकर गहन जांच-पड़ताल की।

मेदांता में शंकरगढ़ के युवा व्यापारी का निधन

शंकरगढ़। नगर पंचायत शंकरगढ़ के लाइनपार निवासी घसीटेराम के नाती रूपकमल केसरवानी (40) का बुधवार की सुबह दिल्ली के मेदांता हॉस्पिटल में निधन हो गया। वह पिछले कुछ दिनों से कोरोना संक्रमित थे और फेफड़े में इंफेक्शन की वजह से उन्हें मेदांता हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। इनका इलाज लगभग 15 दिनों से चल रहा था, लेकिन कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। बुधवार की सुबह करीब 7:30 बजे रूपकमल के निधन की खबर जैसे ही शंकरगढ़ पहुंची, चारों तरफ शोक की लहर दौड़ गई। हंसमुख और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी रूपकमल कई दिनों से मेदांता में भर्ती थे। रूपकमल के आकस्मिक निधन से शंकरगढ़ क्षेत्र के समस्त व्यापारी संग आम जनमानस ने शोक जताया है।

हाईकोर्ट समाचार

इलाहाबाद हाईकोर्ट के चार नवनियुक्त जजों को चीफ जस्टिस ने दिलाई शपथ

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट के नवनियुक्त चार न्यायमूर्तियों को बुधवार को प्रातः 10 बजे शपथ दिलाई गयी। मुख्य न्यायाधीश गोविन्द माथुर ने मुख्य न्यायाधीश कोर्ट में सभी को शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह मुख्य न्यायाधीश के न्याय कक्ष में सोसल डिस्टेन्सिंग का पालन न करते हुए संपन्न हुआ। 11 सितम्बर को केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय ने राष्ट्रपति द्वारा इनकी अपर न्यायमूर्ति के रूप में नियुक्ति की अधिसूचना जारी की थी। नवनियुक्त सभी न्यायमूर्ति न्यायिक सेवा कैडर हैं। यह नियुक्ति दो वर्ष के लिए की गयी है। शपथ ग्रहण करने वाले अपर न्यायमूर्तियों में संजय कुमार पचैरी, सुभाष चंद्र शर्मा, सुभाष चंद व श्रीमती सरोज यादव शामिल हैं।

प्रवास यात्रा में के.एन.गोविंदाचार्य ने किया शिक्षकों, छात्रों एवं लोककलाकारों से संवाद

योग आसन, नृत्य की प्रस्तुति एवं लोकगीतों की प्रस्तुति से भावविभोर हुए लोग

के. एन गोविन्दाचार्य को अंगवस्त्रम व प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए

योगासन नृत्य करते छात्र

घूरपुर। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व महासचिव, चिंतक-विचारक एवं भारत स्वाभिमान मंच के संयोजक के.एन. गोविदाचार्य ने देवप्रयाग से गंगासागर तक अध्ययन प्रवास यात्रा में लॉरेल्स इंटरनेशनल स्कूल सारंगापुर में शिक्षकों, छात्रों एवं लोककलाकारों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि सत्ता और संगठन में उनकी रुचि वर्ष 2000 में ही समाप्त हो गई थी। बावजूद इसके यहां की प्रकृति और लोगों के लिए काम करना मैंने जारी रखा। उन्होंने कहा कि भारत की असली ताकत यहां की प्रकृति, पर्यावरण, लोगों के मूल स्वभाव और संसाधन हैं। गैर राजनीतिक तरीके से भी समाज के साम?र्थ्य से देश खड़ा हो सकता है। मैं ऐसा विश्वास करता हूं और अपने इसी विश्वास का अनुसरण करूंगा। उन्होंने कहा कि नौ सितंबर को मेरे अवकाश के 20 साल पूरे हो गए। इन 20 सालों में मैंने तीन कार्य किए हैं। पहला-अवलोकन, दूसरा विमर्श व तीसरा क्रियान्वयन। कार्यक्रम के संयोजक कवि एवं लेखक शरद कुमार मिश्र ने के.एन. गोविंदाचार्य को अंगवस्त्रम एवं श्रीरामचरित मानस की प्रति देकर स्वागत किया। संवाद में बेसिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के अध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं श्री श्री विश्वविद्यालय के छात्रों संहित लोक कलाकार एवं ऑनलाइन लॉरेल्स इंटरनेशनल स्कूल के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर आनन्द योगालय द्वारा योग आसन नृत्य की प्रस्तुति एवं लोक गायिका प्रिया द्विवेदी एवं धीरज पांडेय के लोकगीतों की प्रस्तुति को सभी ने सराहा।कार्यक्रम का संचालन शरद कुमार मिश्र एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रशांत त्रिपाठी ने किया।इस अवसर पर दिलीप कुमार, शिव मिश्रा, विक्रांत आनंद, हिमांशु त्रिपाठी, ओम प्रकाश मिश्र, अरविंद त्रिवेदी आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय बेरोजगार दिवस के रूप में मनाएगें मोदी का जन्मदिन

करछना। वायदों का तोहफा बांटकर राज करने वाले भाजपा सरकार में किसान, जवान और बेरोजगार पूरी तरह हताश और निराश है। कई जवान दर-दर भटकते हुए रोटी के लिए मोहताज है तो वही देश के करोड़ों बेरोजगारों के सामने भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई है। इस बार बेरोजगार मोदी का जन्म दिन बेरोजगार दिवस के रूप में मनाएगें। ब्लाक कांग्रेस कमेटी करछना के ब्लाक अध्यक्ष डॉ0 दिनेश कुमार सोनी ने यह बातें मंगलवार को पार्टी कार्यालय पर बैठक के दौरान कही। रंगराज सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार भ्रष्टाचार और बेरोजगारी से ध्यान हटाने के लिए नये शगूफे और नये बहाने ढूढ रही है। उन्होने सरकारी नौकरी में 5 वर्ष की संविदा पर रखे जाने की खबर को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि सांसदो और विधायको को भी वर्षभर संविदा के आधार पर रखने और उनके कृतित्व के आधार पर परखने के बाद ही आगे कार्य करने का भी नीति नियम बनाया जाना चाहिए। इस दौरान क्षेत्र में नहरो में पानी न आने, अधिकारियों की मनमानी, चोरी, हत्या और बेरोजगारों की हताशा को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने जमकर भड़ास निकाली। संचालन शिव विजय सिंह ने किया। मौके पर रमेश प्रताप सिंह, विद्याधर मिश्र, सुरेश शुक्ला, सुरेश पटेल, पीआर भट्टाचार्य, कौशलेन्द्र गौड़ आदि मौजूद रहे।

घूरपुर में बालू परिवहन के रायल्टी के मांग पर दो पक्षों में निकले असलहे, हड़कंप

घूरपुर। क्षेत्र के एक बालू के घाट पर डंप बालू के परिवहन करने के लिए रॉयल्टी की मांग को लेकर दो पक्षों में विवाद हो गया। विवाद बढ़ा तो दोनों पक्षों में असलहे निकल आए। इस बीच अफरा तफरी मच गई । सूचना पुलिस को हुई तो पुलिस पहुंची तो मौके पर कोई नहीं मिला ।

विगत कई दिनों पूर्व से बसवार गांव के यमुना के घाट पर डंप पड़ी बालू का परिवहन शुरू हुआ तो वाहनों की लंबी कतार बालू लादने के लिए पहुंचने लगी ।बताया जाता है कि मंगलवार की रात कुछ वाहन बालू लादकर निकल रहे थे ।इसी बीच पट्टेधारक के आदमियों ने बालू लादकर निकल रहे वाहनों को रो लिया और रॉयल्टी की मांग करने लगे ।वाहन संचालक सभी स्थानीय थे जिससे रॉयल्टी देने से मना कर दिया। जिस पर दोनों पक्षों में रॉयल्टी को लेकर कहासुनी होने लगी। कहासुनी विवाद का रूप ले ली और दोनों पक्षों में असलहे निकल आए। गनीमत रही कि किसी ने मामले की जानकारी घूरपुर पुलिस को दे दी। जिसकी भनक दोनो पक्षों को हुई तो पुलिस के आने के भय से दोनों पक्ष मौके से निकल गए। पुलिस मौके पर पहुंची तो कोई नहीं मिला। घाट पर इस बीच हड़कम्प मचा रहा।

दिन में एक बार रवन्ना तो पूरे दिन रॉयल्टी लेकर होता है बालू का परिवहन

बसवार गांव के यमुना के घाट पर डंप बालू के परिवहन के लिए पहले खेप में वाहनों को रवन्ना खरीदना पड़ता है उसके बाद पूरे दिन रॉयल्टी लेकर परिवहन करने की छूट है ।जबकि रवन्ना में समय सीमा दर्ज होती है ।रवन्ना का उपयोग मात्र एक बार ही करने का नियम है ।लेकिन यहां नियम को ताक पर रख ठेकेदारों द्वारा खनन विभाग को रोज भारी भरकम रकम का चूना लगाया जा रहा है । 6 चक्का ट्रक के रवन्ना कीमत 4000 रुपये लिए जाते है तो उसके बाद परिवहन करने के लिए 2500 रुपये रॉयल्टी की होती है वसूली । इसी तरह ट्रैक्टर से 2000 रुपये रवन्ना की कीमत वसूल कर पूरे दिन प्रति खेप 1000 रुपये की होती है वसूली।

पीएम मोदी के जन्मदिन के मद्देनजर चलाया गया स्वच्छता अभियान

स्वच्छता अभियान में शामिल भाजपाई

शंकरगढ़। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस को भारतीय जनता पार्टी ने सेवा सप्ताह के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में बुधवार को शंकरगढ़ के विभिन्न स्थानों में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम चलाया गया। भाजपा मंडल शंकरगढ़ द्वारा शंकरगढ़ के विभिन्न स्थानों में आयोजित स्वच्छता कार्यक्रम में चार प्रमुख जगहों पर ₹स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत₹ का कार्यक्रम हुआ। जिसमें शिवराजपुर के राधे कृष्ण मंदिर में मंडल महामंत्री करुणा पति त्रिपाठी,ब्लॉक परिसर शंकरगढ़ में मंडल उपाध्यक्ष सोमनाथ वर्मा,राम भवन चौराहा में सेक्टर प्रभारी सुशील पांडे, करिया खुर्द हनुमान मंदिर में सेक्टर प्रभारी विपिन सिंह पटेल की अध्यक्षता में साफ सफाई का कार्यक्रम संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम मंडल अध्यक्ष कुलदीप सिंह पटेल की देखरेख में संपन्न हुआ। मंडल उपाध्यक्ष सोमनाथ वर्मा ने बताया कि इस अभियान का मुख्य मकसद समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक और सचेत करना है। इस दौरान तमाम भाजपा कार्यकताओं में मसुरिया दीन वर्मा, सभासद सुजीत केसरवानी, मंडल उपाध्यक्ष सोमनाथ वर्मा, मंडल महामंत्री करुणा पति त्रिपाठी, सेक्टर प्रभारी रूद्र प्रताप मिश्रा, सभासद प्रतिनिधि एवं सेक्टर प्रभारी सुशील पांडे, सेक्टर प्रभारी विपिन कुमार सिंह, भाजपा आईटी सेल से सार्थक गुप्ता, गौ रक्षक दल से राकेश द्विवेदी, वरिष्ठ समाजसेवी सतीश विश्वकर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

आधा दर्जन उपभोक्ताओं के घरों से पकड़ी गई बिजली चोरी, 13 लाख का लगा जुर्माना

2000 घरों में स्थापित मीटरों को किया गया चेक

बिजली चोरी को लेकर कार्रवाई करते विभागयी अधिकारी व कर्मचारी

नैनी। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन निगम लिमिटेड की ओर से बुधवार को मुख्य अभियंता के दिशा निर्देश पर टैगोर टाउन क्षेत्र में मीटर रीडिंग चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान अधिकारियों व कर्मचारियों की टीम ने लगभग 2000 घरों में स्थापित मीटरों को चेक करने के साथ ही रीडिंग ली गई। करीब एक लाख रीडिंग स्टोर पाया गया। जबकि 150 किलो अधिभार को बढ़ाया गया और आधा दर्जन उपभोक्ताओं के घरों से बिजली चोरी को भी पकड़ा गया। अधिकारियों के निर्देश पर कर्मचारियों ने सभी के बिजली कनेक्शन काट दिए। उपखंड अधिकारी विजय तिवारी ने बताया कि मौके पर ही लगभग 13 लाख रूपए का राजस्व निर्धारण किया गया है। इस दौरान सहायक अभियंता मीटर, एसडीओ टैगोर टाउन, एसडीओ तेलियरगंज समेत कई कर्मचारी मौजूद रहे। दिन भर अभियान चलने से बिजली चोरों व बकायेदारों में भारी हड़कंप मचा रहा।

जन अधिकार पार्टी के कार्यकर्ता मनाएंगे मोदी जी का जन्म दिन

खीरी। भागीदारी संकल्प मोर्चा के तत्वाधान में जन अधिकार पार्टी के कार्यकर्ता प्रधानमंत्री जी का जन्मदिन मनाने व बधाई देने का निर्णय लिया है।जन अधिकार पार्टी जन्म दिन का कामना करती है किंतु हमारी संवेदना उन करोड़ों छात्रों ,नवयुवकों के साथ भी है जो रोजगार हेतु चौराहों पर भटक रहे हैं। केंद्र सरकार की वर्तमान नीतियों के कारण नवयुवक छात्र बेरोजगारी से जूझ रहे हैं। रोजगार के अवसर समाप्त हो गए हैं एक तरफ केंद्र सरकार द्वारा छात्रों बेरोजगारों नव युवकों को नौकरी देने के बजाय सरकारी उपक्रमों संस्थानों को बेचा जा रहा है ।नियमित नियुक्तियां बंद हो रही है ।वहीं दूसरी तरफ जो नौकरियां बची भी है उसे सरकार आउटसोर्सिंग एवं संविदा पर नियुक्तियां करने पर विचार कर रही है ।आउटसोर्सिंग में एजेंटों द्वारा नौकरी दिए जाने पर यदि कोई अन्याय होता है तो प्रभावित व्यक्ति न्यायालयों में अपनी अर्जी भी नहीं दे सकता। इस प्रक्रिया से छात्र युवाओं का शोषण बढ़ेगा। बेरोजगार नवयुवकों को बीते छः वर्षों से आश्वासन के सिवा और कुछ नहीं मिला। करोड़ों सरकारी नौकरियां को समाप्त कर दिया गया। हर दो हर वर्ष दो करोड़ नौकरियां देने का वादा करने वाली सरकार आज नवयुवकों को कटोरा थमा कर चौराहे पर खड़ा कर दिया है। जिससे थाली घंटी बजा रहे हैं। जन अधिकार पार्टी और भागीदारी संकल्प मोर्चा ,सरकार कि छात्र और युवा विरोधी नीतियों का पुरजोर विरोध करती है यह मांग करती है कि सरकार रिक्तियां निकालकर और परीक्षा लेकर छात्रों को नियमित नियुक्ति प्रदान करें ।यदि केंद्र सरकार ऐसा करने में विफल रहती है तो जन अधिकार पार्टी व भागीदारी मोर्चा छात्रों के संघर्ष में हर कदम पर उनके साथ रहेगी। जो छात्र और बेरोजगार नवयुवक विरोध प्रकट कर रहे हैं हम उस तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जन अधिकार पार्टी यह समझती है कि नवयुवक, बेरोजगारों को रोजगार दिलाने कि सरकार की जिम्मेदारी होती है। हम सरकार से यह मांग करते हैं कि वह अगर नवयुवकों ,बेरोजगार लोगों की समस्या को देखते हुए नियुक्तियों के लिए तत्काल उचित कदम उठाए।उक्त बातो का चर्चा मोदी जी के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बेरोजगारों के समर्थन में जन अधिकार पार्टी के कार्यकताओं द्वारा किया जाएगा।

उच्च न्यायालय सेवा संवर्ग के 72 अधिकारी पदोन्नत

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय सेवा संवर्ग के 72 अधिकारियों की पदोन्नति की गयी है। महानिबंधक ने इसकी अधिसूचना जारी की है। अधिसूचना के अनुसार राकेश कुमार द्वितीय, उत्तम कुमार श्रीवास्तव (लखनऊ), राजेन्द्र कुमार चड्ढा को संयुक्त निबंधक के पद से निबंधक के पद पर, राम कृपाल मौर्य (लखनऊ), सुबोध चंद्र श्रीवास्तव (लखनऊ), जितेन्द्र नाथ दीक्षित (लखनऊ), कृष्ण कुमार, नन्द लाल प्रथम, संजय कुमार त्रिपाठी, विन्धेश पाण्डेय, संजय सिंह चैहान, अरूण कुमार अग्रवाल, देवी शंकर, मनोज कुमार जैन, कृष्णा नन्द पाण्डेय, अरूण कुमार द्वितीय, शिव प्रसाद को उप निबंधक के पद से संयुक्त निबंधक के पद पर, श्याम नारायण (लखनऊ), पंकज कुमार रस्तोगी (लखनऊ), विनोद कुमार गुप्ता (लखनऊ), मोहम्मद अजीज उल्ला, जितेन्द्र कुमार गुप्ता, जीवा नन्द सिंह, शिव बालक कुशवाहा, संतोष कुमार श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार, श्रीराम विश्वकर्मा, राजेश कुमार वर्मा (लखनऊ), सुधीर सिंह (लखनऊ), प्रेमानंद मिश्र, परिमल चतुर्वेदी, राम राखन सिंह, रवि प्रकाश श्रीवास्तव, अशोक कुमार यादव (लखनऊ), हीरा लाल बारी को सहायक निबंधक के पद से उप निबंधक के पद पर, विद्याकान्त, विपिन कुमार, शबीना फारूक, सर्वेश कुमार सिंह, कंचन दीक्षित (लखनऊ), अनीता बोस, मानवेन्द्र प्रताप सिंह (लखनऊ), अशोक कुमार श्रीवास्तव, भगवती प्रसाद पंत, निरंजन सिंह, धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, सागिर अहमद (लखनऊ), अबरारूल हक, विजय कुमार, अजीत कुमार श्रीवास्तव, रविन्द्र कुमार उपाध्याय, सुधीर कुमार को अनुभाग अधिकारी के पद से सहायक निबंधक के पद पर और दिनेश कुमार, भूपेन्द्र सिंह, पन्नू यादव (लखनऊ), सौरभ श्रीवास्तव (लखनऊ), मोहम्मद स्वयैब (लखनऊ), ओन्कार श्रीवास्तव, रंजना, अम्बरीष पाण्डेय (लखनऊ), कोमल चंद्रा, दुर्गेश कुमार सिंह, चंद्रेश कुमार विश्वकर्मा, ओमेन्द्र प्रताप सिंह चैहान (लखनऊ), सुनील कुमार (लखनऊ), तृप्ति शिखर श्रीवास्तव (लखनऊ), प्रियंका बाजपेयी (लखनऊ), अरुणाभ शर्मा, शिखर श्रीवास्तव (लखनऊ), चंदा पाण्डेय, इनाब जाफरी (लखनऊ), क्षिप्रा गुप्ता (लखनऊ), वर्षा त्रिपाठी(लखनऊ) को समीक्षा अधिकारी के पद से अनुभाग अधिकारी के पद पर पदोन्नति प्रदान की गयी है। उच्च न्यायालय कर्म अधिकारी संघ के महासचिव बृजेश कुमार शुक्ल ने समस्त पदोन्नति प्राप्त अधिकारियों को बधाई देते हुए मुख्य न्यायाधीश गोविंद माथुर, न्यायमूर्ति पंकज मित्तल, संघ के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति बाल कृष्ण नारायण, संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति सुनीत कुमार, न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और महानिबंधक अजय कुमार श्रीवास्तव प्रथम के प्रति आभार व्यक्त की ।

वादे से मुकरा रेल मंत्रालय, अपनी मांगों पर अड़े किसान

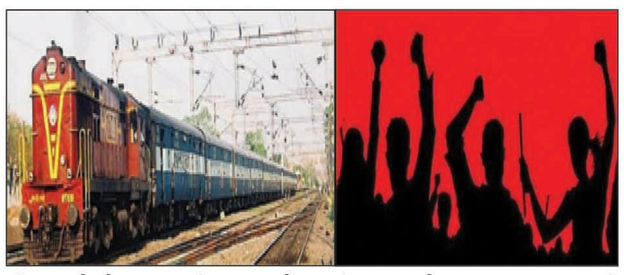

करछना। रेल अधिग्रहण में प्रभावित किसान मुआवजा चार गुना, पुर्नवास, नौकरी देने को लेकर अड़े किसान अधिकारियों की वार्ता विफल होने के चलते लंबी दूरी की इस रेल लाइन कार्य का वाधित होने से समय पर पूरा न होने से परियोजना का कार्य लंबे समय तक टल सकता है। दिल्ली हावड़ा फोर लाइन रूट चैड़ीकरण को लेकर डेडिकेटेड कारिडोर फ्रंट परियोजना के अन्तर्गत 2009 से लेकर 2013 के बीच किसानों के भूमि के अधिग्रहण का कार्य किया गया था। अधिग्रहण के दौरान प्रभावित किसानों को चार गुना मुआवजा पुर्नवास व नौकरी देने का वायदा किया गया था। जिसकी आस में लगभग 7 वर्ष बीत जाने के बाद भी सुविधायें किसानों कों नहीं दी गयी। इसी को लेकर कई बार कचरीए प्राथमिक विद्यालय गधियांव, बसरिया, गलिबाबाद, व्योहरा आदि गांवों में अधिकारियों एवं किसानों के बीच हुयी वार्ता पर कोई निष्कर्ष न निकलने के कारण परियोजना का कार्य पूरी तरह बंद है। इस परियोजना के अंतर्गत बड़े पैमाने पर किसानों की भूमि के अलावा रहायषी मकान भी प्रभावित हुये हैं। जिसमें ब्यौहरा, गलिबाबाद, कचरी, मुंगारी, बसरिया आदि ऐसे गांव हैं जहां सैकड़ों किसानों का मकान अधिग्रहण के दायरे में प्रभावित है। तहसील क्षेत्र के बसरिया गांव के रेल अधिग्रहण से प्रभावित किसानों में संतोष यादव ने आरोप लगाया है कि उनका मकान रेल अधिग्रहण के दायरे में आने के बाद 10.50 लाख मुआवजा बना था, लेकिन अभी उन्हें नहीं मिल पाया है। अधिकारियों की मिली भगत के चलते और भुगतान कर दिया गया और 5.5 लाख रुपए अभी नहीं दिया गया है। इसी तरह कई किसानों के साथ कारनामे कमिषन के लिए भूमि अध्याप्ति कार्यालय द्वारा ऐसे कारनामे किये गये जिस कारण किसानों को उनका उचित मुआवजा नहीं मिल सका। जिससे प्रभावित किसान अपने ही पैसे के लिए मुकदमे के चक्कर में कोर्ट कचहरी का चक्कर लगा रहे हैं। इन गांवों के किसान अधिकारियों द्वारा दिये गये आश्वासन व अतिरिक्त मुआवजे को लेकर मकान खाली करने को तैयार नहीं हैं। जिससे लंबी दूरी की इस परियोजनों में रिहायषी इलाकों वाले गांवों में प्रभावित किसानों ने इस परियोजना द्वारा कराये जाने वाले कार्यों को पूरी तरह से रोक लगा रखी है। किसान अपनी मांगों को लेकर अडिग हैं। उनका कहना है कि जब तक किये गये वादों को पूरा नहीं किया जाता है तब तक हम अपना मकान और जमीन छोड़ने को तैयार नहीं हैं। वहीं किसानों की इस मांग के चलते 2022 तक इस परियोजना को पूर्ण कराने का लक्ष्य रखा गया हैए लेकिन ऐसी बहुत अड़चने सामने हैं जिन्हें दूर करके ही परियाजना को पूर्ण किया जा सकता है।

संक्षेप समाचार

न्यायालय के आदेश की अवहेलना से भटक रहा भुक्तभोगी

करछना। क्षेत्र के हथिगन चन्द्रभान सिंह का पूरा में एक जमीनी मामले को लेकर न्यायालय से स्थगन आदेश मिलने के बावजूद अधिकारियों की मनमानी के चलते भुक्तभोगी को दर-दर भटकना पड़ रहा है। भुक्तभोगी तुलसीराम, सुभाष चन्द्र पटेल व राम कैलाश ने अपनी जमीन पर शोरेपुस्तो द्वारा जबरन कब्जे को लेकर न्यायालय में गुहार लगाने पर उसे जमीनी हक पर बने रहने और अवैध कब्जा हटाने का आदेश निर्गत हुआ है। किन्तु राजस्व कर्मियों की मनमानी और उदासीनता के चलते शोरेपुस्त उसकी जमीन पर जबरन हस्तक्षेप कर रहें है। उक्त लोगों ने उपजिलाधिकारी से लेकर मुख्यमंत्री पोर्टल तक गुहार लगाई और लगभग 32 बार सक्षम अधिकारियों के दरवाजे खटखटाए। किन्तु लगातार न्यायालय के आदेश की अवहेलना और अधिकारियों द्वारा इसे गंभीरता से नही लिया जा रहा है। संपूर्ण समाधान दिवस पर भी भुक्तभोगियों द्वारा कईबार फरियाद करने के बावजूद अधिकारियों द्धारा मौके की जांच कर नियमानुसार कार्रवाई के लिए आदेशित तो किया जाता है लेकिन राजस्वकर्मी निजी फायदे को लेकर दूसरे पक्ष को लाभ पहुंचाने के लिए टाल मटोल कर देते है। आरोप है कि जाति विशेष का पक्ष लेने और लाभ पहुंचाने के लिए अभी तक जान बूझकर उक्त मामले को लंबित किया जा रहा है।

मण्डलायुक्त ने कोविड-19 की समीक्षा करते हुए दिये निर्देश

सर्विलांश टीम और कांटेक्ट टेस्टिंग के कार्य की मानीटरिंग जमीनी स्तर पर करना सुनिश्चित करें

समीक्षा बैठक करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार की अध्यक्षता एवं एडीजी जोन प्रेम प्रकाश की उपस्थिति में गांधी सभागार में कोविड-19 की अद्यतन स्थिति की समीक्षा बैठक की। मण्डलायुक्त ने सर्विलांश टीम की संख्या बढ़ाकर पूरे क्षेत्र में टेस्टिंग कराने के निर्देश दिये। उन्होंने टेस्टिंग सेंटरों पर फार्म भरने तथा गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही उसकी डेटा की फीडिंग कराने को भी कहा है। स्वास्थ्य विभाग की टीम को निर्देशित करते हुए मण्डलायुक्त ने कहा कि अस्पताल में आये हुए मरीजों को तत्काल भर्ती कर उन्हें चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध करायी जाये। इस कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। मण्डलायुक्त ने कोविड-19 से हुई मौतों पर चिंता जताते हुए चिकित्सा विभाग को उसकी स्टेटजी तैयार करने के निर्देश दिए। साथ ही आईसीयू में भर्ती मरीजों की जांच कराकर उनका विवरण तैयार कराने के निर्देश दिये। मण्डलायुक्त ने सर्विलांश टीम की कार्यप्रणाली पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उन्हें अपने कर्तव्यों को सुचारू रूप से निर्वहन करने के निर्देश दिये। कांटेक्ट टैजसिंग और सर्विलांश टीम को जमीनी स्तर पर जाकर मानीटरिंग के कार्य को सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने कहा कि मानीटरिंग के कार्य में किसी भी प्रकार की कोताही कतई बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। मण्डलायुक्त ने बेली के चिकित्साअधीक्षक श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव को कड़ी फटकार लगाते हुए व्यवस्थाओं को सुधारने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि आइशोलेशन में भर्ती मरीजों का उचित ढंग से इलाज किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने मरीजों का एक्सरे और डायगलिसिस को अच्छी तरह से करने को कहा। मण्डलायुक्त ने अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों के रिकार्ड को सुरक्षित रखने के लिए उनसे भरवायें जाने वाले फार्म को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने के निर्देश दिये। साथ ही प्रत्येक मरीज की काउंसलिंग बेहतर ढंग से किया जाये। मण्डलायुक्त ने कैण्टोनमेंट जोन में माइक्रो प्लान तैयार कर टेस्टिंग की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मोहल्ले वाइज एक सुपरवाइजर नियुक्त करते हुए उसकी मानीटरिंग सुनिश्चित करने को कहा। मण्डलायुक्त ने कहा कि मोबाइल टीमों के क्षेत्र में जाने की सूचना पहले ही उस क्षेत्र के लोगो को दे दी जाये, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग मोबाइल टीम के द्वारा अपनी जांच करा सके। मण्डलायुक्त ने होम आइशोलेशन के बारे में जानकारी लेते हुए कहा कि होम आइशोलेशन में रह रहे लोगो की अच्छी तरह से मानीटरिंग की जाये। उन्हें किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो तत्काल उन्हें सुविधा उपलब्ध करायी जाये। कैंटोनमेंट जोन में सैनेटाइजेशन के कार्य को बेहतर ढंग से किया जाये। उन्होंने डोर-टू-डोर सर्वे के कार्य में लगी टीमों को तेजी के साथ अपने कार्य को पूरा करने के लिए कहा। अस्पतालों में दवाओं और ऑक्सीजन की कोई कमी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को पूर्व में ही पर्याप्त मात्रा में दवाओं और ऑक्सीजन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों को एक सप्ताह के स्टॉक की व्यवस्था रखने को कहा। मण्डलायुक्त ने कोविड प्रोटोकाल का पालन नहीं करने वाले प्राइवेट अस्पतालों के विरूद्ध कार्यवाही करने को कहा। बैठक में आई0जी0 जोन-के0पी0 सिंह, जिलाधिकारी-भानु चन्द्र गोस्वामी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक-सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी-आशीष कुमार, प्राचार्य मेडिकल कालेज-एस0पी0 सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी- जी0एस0 वाजपेयी सहित सभी प्रशासन एवं चिकित्सा विभाग के अधिकारीगण मौजूद रहे।

गूगल मीट के जरिए लगेगी अपराधियों पर लगाम

सुभाष चौराहे पर पुलिस विभाग के आला अधिकारियों ने किया गूगल मीट का शुभारंभ

गूगल मीट का शुभारंभ करते पुलिस महानिदेशक

प्रयागराज। पुलिस महानिदेशक जोन प्रयागराज प्रेम प्रकाश एव पुलिस महानिरिक्षक प्रयागराज परिक्षेत्र कवींद्र प्रताप सिंह एवम पुलिस उप महानिरक्षक। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने गूगल मीट का शुभारंभ किये। बुधवार को प्रयागराज के सुभाष चौराहे पर पुलिस के आला अधिकारियों ने गूगल मीट का शुभारंभ किया और गूगल मीट के जरिये सघन चेकिंग अभियान भी चलाया उस दौरान हर संदिग्ध व्यक्तियों की तलाशी ली गयी साथ गाड़ियों में लगे ब्लैक फिल्म को पुलिस ने उतरवाया। यह सघन चेकिंग अभियान एक साथ गूगल मीट के माध्यम से प्रयागराज मंडल के सभी जनपदों में चलाया गया इसका मकसद अपराधियों के धरपकड़ से जुड़ा है 'जैसे कि कोई अपराधी प्रयागराज में अपराध कर के पास के जिलों में जाने की कोशिश करता है तो वह नहीं जा सकेगा क्योंकि एक साथ पुलिस चेकिंग अभियान चलाती रहेगी और उस अपराधी को पकड़ लिया जाएगा प्रयागराज के सुभाष चौराहे पर जिले के एसएसपी आईजी और डीआईजी तीनों आला अधिकारी मौजूद रहे उनके ही निगरानी में पुलिस ने सघन चेकिंग अभियान चलाया और उस दौरान आईजी ने प्रयागराज मंडल के सभी जिलों को एक साथ गूगल मीट के माध्यम से रूबरू होते रहे और लगातार पूछताछ भी करते रहे कि किस तरह से चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है और उसका क्या रिस्पांस मिल रहा है।

दो जोड़ी विशेष गाड़ियों का संचालन

प्रयागराज। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु दो जोड़ी विशेष गाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अजीत कुमार सिंह के अनुसार गाड़ी सं. 01055-01056 लोकमान्य तिलक (ट.) गोरखपुर-लोकमान्य तिलक (ट.) स्पेशल गाड़ी का ठहराव, समय व संचालन के दिन 11055-11056 लोकमान्य तिलक (ट.) गोरखपुर- लोकमान्य तिलक (ट.) गोदान एक्सप्रेस की तरह रहेगा। गाड़ी सं. 01055 प्रत्येक सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, रविवार को चलेगी। प्रारम्भिक स्टेशन से यात्रा 18 सितम्बर से प्रारंभ होगी तथा गाड़ी सं. 01056 प्रत्येक बुधवार, शुक्रवार, रविवार, मंगलवार को चलेगी। प्रारम्भिक स्टेशन से यात्रा 20 सितम्बर से अगले निर्देश तक रहेगी। गाड़ी संरचना स्लीपर श्रेणी-12, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी-04, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी-01,सामान्य श्रेणी-03 डिब्बे होंगे। इसी प्रकार गाड़ी सं. 01059-01060 लोकमान्य तिलक (ट.)-छपरा-लोकमान्य तिलक (ट.) स्पेशल गाड़ी का ठहराव, समय व संचालन के दिन 11059-11060 लोकमान्य तिलक (ट.) छपरा-लोकमान्य तिलक (ट.) गोदान एक्सप्रेस की तरह गाड़ी 01059, प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार, शनिवार चलेगी। प्रारम्भिक स्टेशन से यात्रा प्रारंभ करने की तिथि 17 सितम्बर होगी। गाड़ी सं. 01060 प्रत्येक गुरुवार, शनिवार, सोमवार को चलेगी। प्रारम्भिक स्टेशन से यात्रा प्रारंभ करने की तिथि 19 सितम्बर से अगले निर्देश तक रहेगी। गाड़ी संरचना में स्लीपर श्रेणी-12, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी-04, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी-01, सामान्य श्रेणी-03 डिब्बे होंगे।

कार्यों में लापरवाही या उदासीनता पाये जाने पर होगी कड़ी कार्रवाई : मण्डलायुक्त

कार्यों में लापरवाही पाये जाने पर 4 अधिकारियों के विरूद्ध स्पष्टीकरण जारी करने एवं बैठक में अनुपस्थित पाये जाने पर अधिशाषी अभियंता लघु सिंचाई के विरूद्ध चेतावनी जारी करने का दिये निर्देश

बैठक में निर्देश देते मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार की अध्यक्षता में आयुक्त कार्यालय के गांधी सभागार में मण्डलीय समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में लघु सिंचाई, ऊर्जा, लोक निर्माण, कृषि, सहकारिता, पशुधन, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, पंचायतीराज, नगर विकास, ग्राम्य विकास, नमामि गंगे, खाद्यय एवं रसद, मत्स्य, उद्यान, समाज कल्याण, अल्पसंख्यक कल्याण, बाल विकास पुष्टाहार, दुग्ध विकास, बेसिक शिक्षा, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास, श्रम, खाद्यय सुरक्षा एवं औषधी प्रशासन सहित अन्य विभागों की संचालित योजनाओं की बिंदुवार समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने सभी विभागों के सम्बंधित अधिकारियों को उपलब्ध धन के सापेक्ष निर्माण कार्यों को गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ पूर्ण करने एवं संचालित योजनाओं को पारदर्शी ढंग से क्रियान्वित करते हुए पात्रों को लाभान्वित कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने सभी विभागों के अधिकारियों को हिदायत देते हुए कहा कि कार्यों में लापरवाही या उदासीनता कदापि न बरती जाये। उदासीनता या लापरवाही पाये जाने पर सम्बंधित अधिकारी के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

बैठक में सिंचाई विभाग के कार्यों के तहत नहरों में टेल तक पानी पहुंचाने तथा सिल्ट सफाई के कार्यों की समीक्षा के दौरान अधिशाषी अभियंता नहर प्रखण्ड के द्वारा बताया गया कि मण्डल में कुल 5 हजार किमी0 की सिल्ट सफाई का कार्य 15 अक्टूबर से 15 दिसम्बर तक किया जाना है। मण्डलायुक्त ने सिल्ट सफाई के कार्यों की योजना बनाकर निर्धारित समय के अनुसार कार्य को कराये जाने हेतु सभी आवश्यक तैयारियां समय से सुनिश्चित कर लिए जाने का निर्देश दिया है, साथ ही साथ उन्होंने नहरों में रोस्टर के अनुसार टेल तक पानी पहुंचाये जाने का भी निर्देश दिया है। बैठक में अधिशाषी अभियंता लघु सिंचाई, प्रयागराज के अनुपस्थित पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने उनके विरूद्ध चेतावनी जारी करने का निर्देश दिया है। विद्युत विभाग की समीक्षा में विद्युत विभाग के अभियंता के द्वारा बताया गया कि सरकारी कार्यालयों में बेसिक शिक्षा विभाग एवं ग्राम पंचायत विभाग पर विद्युत बकायें की अधिक धनराशि लम्बित है। इसके अलावा अन्य विभागों पर भी विद्युत देय बकाया है। मण्डलायुक्त ने मण्डल के सभी जिला विकास अधिकारियों एवं खण्ड विकास अधिकारियों को बैठक कर शिक्षा विभाग एवं ग्राम पंचायत विभाग पर लम्बित विद्युत बकाये की धनराशि जमा कराये जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया है। निवेश मित्र पर विद्युत विभाग के लम्बित आवेदन पत्रों में कौशाम्बी में 04, प्रयागराज में 01 तथा फतेहपुर में 04 उजीर्कृत हेतु लम्बित आवेदन पत्रों को एक सप्ताह के अंदर निस्तारित करने का निर्देश विद्युत विभाग को दिया है। नई सड़कों के निर्माण/चैड़ीकरण/सुदृढ़ीकरण के कार्य में प्रतापगढ़ एवं फतेहपुर की प्रगति खराब पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने दोनों जनपदों के पीडब्लूडी के सम्बंधित अधिशाषी अभियंताओं को स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने वरिष्ठ अधिकारियों को क्षेत्र भ्रमण कर कार्य की गुणवत्ता का नियमित रूप से निरीक्षण करते रहने का निर्देश दिया है। सेतु निर्माण के कार्यों की समीक्षा करते हुए प्रयागराज में 07 में से 04 स्थानों पर जमीन अधिग्रहण से सम्बंधित समस्या बताये जाने पर मण्डलायुक्त ने मुख्य विकास अधिकारी को इस सम्बंध में आवश्यक कार्रवाई करते हुए जमीन अधिग्रहण की कार्यवाही सुनिश्चित कराये जाने के लिए निर्देशित किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की समीक्षा करते मण्डलायुक्त ने आधार फीडिंग या अन्य कारणों से जो किसान योजना का लाभ नहीं पा रहे है तत्काल त्रुटि को दूर कराते हुए ऐसे पात्र किसानों को भी लाभान्वित कराये जाने का निर्देश दिया है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की समीक्षा में मण्डलायुक्त ने मण्डल के सभी उप निदेशक कृषि तथा जिला कृषि अधिकारी को जागरूकता अभियान चलाकर अधिक से अधिक किसानों को फसल बीमा हेतु प्रेरित किए जाने के लिए कहा है। सहकारिता देयकों की समीक्षा करते हुए प्रतापगढ़ एवं फतेहपुर में ऋण वसूली की प्रगति खराब पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए मण्डलायुक्त ने प्रतापगढ़ एवं फतेहपुर के एआर कापरेटिव को स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। निराश्रित गोवंषों के संरक्षित रखने में प्रतापगढ़ एवं फतेहपुर की प्रगति खराब पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने जनपदों के मुख्य पशुचिकित्साधिकारियों को इसमें सुधार लाये जाने का निर्देश दिया है। गोवंशीय एवं महिषवंशीय पशुओं की इयर टैगिंग की प्रगति अच्छी न पाये जाने पर सभी मुख्य पशु चिकित्साधिकारियों को कार्य में तेजी लाते हुए इयर टैगिंग के कार्य को लक्ष्य के सापेक्ष सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत गोल्डेन कार्ड बनाये जाने की प्रगति अच्छी न पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने संयुक्त निदेशक स्वास्थ्य को कार्य का अनुश्रवण करते हुए गोल्डेन कार्ड बनाये जाने के कार्य में तेजी लाये जाने का निर्देश दिया है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर दवाओं की उपलब्धता में फतेहपुर में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर दवाओं की उपलब्धता निर्धारित संख्या के अनुसार कम पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने अपर निदेशक स्वास्थ्य को इस सम्बंध में तत्कआल आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। उन्होंने जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थियों एवं आशाओं का शत-प्रतिशत भुगतान अनिवार्य रूप से सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। टीकाकरण के कार्य को भी लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत सुनिश्चित कराये जाने के लिए कहा है। पंचायतीराज विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने पंचायत भवनों एवं सामुदायिक शौचालय के निर्माण कार्य को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। अमृत योजना के तहत घरों में पानी के कनेक्शन दिए जाने के कार्य में तेजी लाये जाने का निर्देश नगर विकास विभाग को दिया है।

करमा में आयोजित हुई कवि संगोष्ठी, वरिष्ठ कवि जगदम्बा प्रसाद शुक्ल मुख्य अतिथि रहे

करमा। करमा स्थित एक विद्यालय में कवि संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी भाषा पर अनेकों कविताओं के माध्यम से भाषा के उत्थान एवम महत्ता पर बल दिया गया उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि जगदम्बा प्रसाद शुक्ल रहें श्री शुक्ल नें कहा कि हिन्दी का साहित्य बहुत ही विशाल एवम मधुर हैं। हिन्दी की विभिन्न रचनाएं समाज में दशा एवम दिशा परिवर्तन की दिशा में काफी अहम भूमिका निभाती आ रही हैं। श्री शुक्ल पिछ्ले 25वर्षों से अपने कवित्त रचनाओं से समाज में युवाओं कों सन्मार्ग पर लाने का प्रयास कर रहें हैं। उक्त कार्यक्रम में सामाजिक दूरी का ध्यान रखतें हुए सन्तोष शुक्ला समर्थ, लखन प्रतापगढ़ी, विजय चितौरी आदि लोग मौजूद रहें।

प्रधानमंत्री के जन्म दिवस के उपलक्ष में पंवर में चला स्वच्छता अभियान

साफ सफाई करते भाजपाई

घूरपुर। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के जन्म दिवस 17 सितंबर को सेवा सप्ताह (14 से 20) के अंतर्गत कौंधियारा मंडल के पवंरी सेक्टर में हिंगलाज देवी आश्रम एवं दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर परिसर पवंर में कौंधियारा मंडल के मंडल अध्यक्ष शिव प्रसाद केसरवानी जी के निर्देशानुसार स्वच्छता अभियान के अंतर्गत भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें प्रमुख रुप से जिला प्रतिनिधि राजमणि पासवान, मंडल महामंत्री दिनेश प्रजापति, सेक्टर संयोजक जितेंद्र दास व सेक्टर संयोजक सुनील पांडे के साथ बीरबल मिश्रा, बूथ अध्यक्ष दिनेश पांडेय, मंगला प्रजापति, विरेंद्र विश्वकर्मा, सूर्यनारायण मिश्रा, राकेश मिश्रा, इंद्रजीत, सुरेश चतुर्वेदी, ओम प्रकाश, शिव कुमार बिंद आदि लोगों ने मंदिर परिसर में झाड़ू लगाकर एवं परिसर व मार्ग को साफ किए।

भाजपा, भारतीय जानलेवा पार्टी है : सुशील पासी

ज्ञापन सौंपते प्रदेश सचिव सुशील पासी व गंगापार जिलाध्यक्ष राम किशुन सिंह पटेल व कार्यकर्ता

प्रयागराज। प्रदेश सरकार के तुगलकी फरमान से प्रतियोगी छात्र स्व. चौधरी राजीव पटेल की आत्महत्या संविदा भर्ती रॉलेक्ट जैसे काले कानून के विरोध में आज युवक कांग्रेस, एनएसयूआई, जिला/ शहर कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को जिलाधिकारी कार्यालय कचहरी में महामहीम राज्यपाल महोदया को सम्बोधित ज्ञापन एडीएम सिटी को सौंपा। इस दौरान कांग्रेस कार्यकताओं ने बेरोजगारी को लेकर नारेबाजी भी लगाई 'साथ ही साथ प्रतियोगी छात्र स्व.राजीव पटेल को न्याय देने के प्रदेश सरकार से मांग की है।

इस अवसर पर प्रदेश सचिव व जनपद प्रभारी सुशील पासी ने कहा कि प्रदेश सरकार के तुगलकी फरमान से छात्रों नौजवानों में निराशा हैं, प्रदेश की जनता बेहाल है। एसएसएफ जैसा कानून लगाकर लोकतंत्र की हत्या कर रही हैं । वही कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए गंगा पार अध्यक्ष राम किशुन सिंह पटेल ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं की आवाज को दमनकारी नीति अपनाकर दबाना चाहती है। युवाओं के बारे में कहा जाता है कि कि जिस ओर जवानी चलती है, उस ओर जमाना चलता है' वर्तमान समय में युवा वर्ग की टोली कांग्रेस पार्टी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आगामी विधानसभा चुनाव में यही युवा पीढ़ी प्रदेश सरकार को मुंहतोड़ जवाब देगी । उन्होने सभा को संबोधित करते हुए युवाओं के बारे में कहा कि ''चलो तो पल में प्रलय मचा दो तुम, भू-धर को भी सरका दो तुम, इंगित पर वसुधा नाच उठे, पानी में आग लगा दो तुम।'' शायरी के माध्यम से राम किशुन सिंह पटेल ने युवाओं में जोश का संचार भर दिया। इस शायरी से तालियों की गड़गड़ाहट से कचहरी परिसर गुंजायमान हो उठा। उन्होंने कहा कि योगी जी के दबाने से युवाओं का आवाज नहीं दबेगी अब तो युवा अपने बुलंदियों के साथ अपनी आवाज को बुलंद करने को आगे आयें। एक तरफ कोरोना महामारी से आम जन मानस परेशान है वहीं दूसरी तरफ युवाओं का ही नहीं पुलिस समाज के हर वर्गों को प्रताड़ित करने का काम कर रहे हैं। आवाज उठाने वालें युवाओं का पुलिसिया उत्पीड़न किया जा रहा है। कांग्रेस पार्टी इस दमनकारी नीति के खिलाफ लड़ रही है आगे भी लड़ती रहेगी।

कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष रामकिशुन सिंह पटेल, शहर अध्यक्ष नफीश अनवर, प्रदेश महासचिव विवेकानंद पाठक जिला उपाध्यक्ष ओम प्रकाश तिवारी, एनएसयूआई के पूर्वी प्रभारी अवनीश यादव, अध्यक्ष अखिलेश यादव, दीपचंद तिवारी कोषाध्यक्ष, वरिष्ठ कांग्रेस नेता किशोर वार्ष्णेय, संजय तिवारी, कांग्रेस नेता सुरेश यादव, जिला प्रवक्ता डॉ अजय प्रकाश सरोज, रजिया सुल्तान ,जिला महासचिव शदाब अहमद, सन्तोष सिंह, युवक कांग्रेस जिलाध्यक्ष जीतेन्द्र तिवारी, जिला सचिव अजीत भारतीय, दिवाकर भारती, गीता भारतीय, मंगली प्रसाद कुशवाहा, विनोद तिवरी, देव राज उपाध्याय, एनएसयूआई प्रदेश महासचिव अक्षय यादव विकास तिवरी, अभ्युदय त्रिपाठी, असफाक अहमद, मो0 नशीम हाशमी, श्रीशचंद्र दूबे, राम प्रवेश पासी, राम जी विश्वकर्मा, सिपतैंन बब्लू सुष्मिता यादव, महबूब आलम राइन, राकेश पटेल, कामेश्वर सोनकर, रितेश मिश्र, रजनीश पांडेय आदि सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

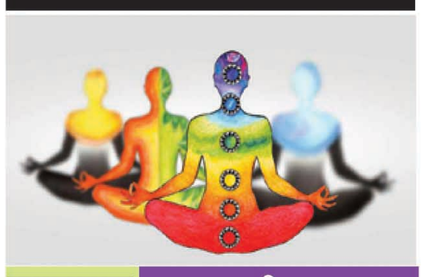

प्रयागराज गुरूवार, 17 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

क्रियायोग से चैतन्य मृत्यु (समाधि) की अनुभूति

File Photo

शरीर का कोई भी अंश मृत्यु को नहीं प्राप्त होता है। शरीर का प्रत्येक अंश दृश्य अथवा अदृश्य रूप में सदैव विद्यमान रहता है। इसको अच्छी तरह समझने के लिए पानी की स्थिति पर ध्यान दीजिये जिस प्रकार पानी, बर्फ व वास्प में तथा वास्प, पानी व बर्फ में बदलता रहता है, परंतु पानी कभी भी मरता नहीं है केवल उसका स्वरूप रूपांतरित होता रहता है। ठीक उसी प्रकार शरीर दृश्य से अदृश्य तथा अदृश्य से दृश्य तत्व में रूपांतरित होती रहती है। स्वरूप रूपांतरण की क्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि उसे मन, बुद्धि व इंद्रियों की सीमित अनुभूति के द्वारा समझा नहीं जा सकता है। इसे अनुभव करने के लिए अतींद्रिय दृष्टि की आवश्यकता होती है, जिसे क्रियायोग की साधना से सहजता में प्राप्त किया जा सकता है। क्रियायोग के अभ्यास से स्वरूप को दृश्य से अदृश्य व अदृश्य से दृश्य में रूपांतरित होने की सूक्ष्म घटना का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तथा इस सूक्ष्म रूपांतरण को इच्छा अनुसार प्रकट करने की विधि पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था में साधक जीवन व मृत्यु की संपूर्ण स्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर मुक्ति का अनुभव करता है। मुक्ति का अभिप्राय जन्म मृत्यु के जाल से मुक्त होना नहीं है, बल्कि जन्म व मृत्यु की संपूर्ण घटनाओं पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करना है। मुक्त आत्मा वही है जो स्वेच्छा से मरने व पुनः जीने की कला को जानता है। प्रभु ईसा के परम शिष्य संत पाल इस विद्या में पूर्ण निपुण थे। वे प्रतिदिन चैतन्य मृत्यु जिसे समाधि कहा गया है, की अनुभूति करते हुए परमानंद रूपी दिव्य अमृत का पान करते थे। उन्होंने बाइबिल में स्पष्ट रूप से कहा है। 'मुझे ईसा में जो परम आनंद प्राप्त होता है मैं उस आनंद की शपथ खाकर कहता हूं कि मैं प्रतिदिन मरताा हूं'

क्रियायोग की सूक्ष्म साधना के द्वारा साधक शरीर में बहने वाली प्राणशक्ति व उसकी विभिन क्रियाकलापों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। प्राणशक्ति को आवश्कतानुसार शरीर में व्यवस्थित इन्द्रियों में प्रवाहित करना व उसे पुनः इंद्रियों से खींच कर ब्रेन व स्पाइनल कार्ड में स्थापित करना तथा ब्रेन व स्पाइनल के विभिन्न शक्ति केंद्रों में नीचे से ऊपर की और उठाते हुए आज्ञाचक्र के मूल केंद्र कुटस्थ में मिलन कर देने की क्रिया का ज्ञान होने पर जीवन व मृत्यु पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है। ऐसी अवस्था में साधक दिव्य इच्छाशक्ति के द्वारा जीने व मरने का ज्ञान प्राप्त कर अपने अमर स्वरूप की अनुभूति कर लेता है कि वह कभी भी मरता नहीं है, केवल उसका स्वरूप रूपांतरित होता रहता है। ठीक उसी प्रकार शरीर दृश्य से अदृश्य तथा अदृश्य से दृश्य तत्व में रूपांतरित होती रहती है। स्वरूप रूपांतरण की क्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि उसे मन, बुद्धि व इंद्रियों की सीमित अनुभूति के द्वारा समझा नहीं जा सकता है। इस सत्य की अनुभूति करने के लिए अतींद्रिय दृष्टि की आवश्यकता होती है, जिसे क्रियायोग की साधना से सहजता में प्राप्त किया जा सकता है। क्रियायोग के अभ्यास से स्वरूप को दृश्य से अदृश्य व अदृश्य से दृश्य में रूपांतरित होने की सूक्ष्म घटना का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तथा इस सूक्ष्म रूपांतरण को इच्छा अनुसार प्रकट करने की विधि पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था में साधक जीवन व मृत्यु की संपूर्ण स्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर मुक्ति का अनुभव करता है। मुक्ति का अभिप्राय जन्म मृत्यु के जाल से मुक्त होना नहीं है, बल्कि जन्म व मृत्यु की संपूर्ण घटनाओं पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करना है। मुक्त आत्मा वही है जो स्वेच्छा से मरने व पुनः जीने की कला को जानता है। प्रभु ईसा के परम शिष्य संत पाल इस विद्या में पूर्ण निपुण थे। वे प्रतिदिन चैतन्य मृत्यु जिसे समाधि कहा गया है, की अनुभूति करते हुए परमानंद रूपी दिव्य अमृत का पान करते थे। उन्होंने बाइबिल में स्पष्ट रूप से कहा है। 'मुझे ईसा में जो परम आनंद प्राप्त होता है मैं उस आनंद की शपथ खाकर कहता हूं कि मैं प्रतिदिन मरताा हूं'।

क्रियायोग की सूक्ष्म साधना के द्वारा साधक शरीर में बहने वाली प्राणशक्ति व उसकी विभिन्न गतियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। प्राणशक्ति को इच्छा अनुसार शरीर में प्रवाहित करने व उसे पुनः इंद्रियों से खींच कर सिर व रीढ़ में स्थापित करना तथा रीढ़ के विभिन्न शक्ति केंद्रों में नीचे से ऊपर की और उठाते हुए आज्ञाचक्र के मूल केंद्र कुटस्थ में मिलन कर देने की क्रिया का ज्ञान होने पर जीवन व मृत्यु पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है। ऐसी अवस्था में साधक दिव्य इच्छाशक्ति के द्वारा जीने व मरने का ज्ञान प्राप्त कर अपने अमर स्वरूप की अनुभूति कर लेता है।

Kriyayoga - The Science of Leaving Body Consciously (Samadhi)

File Photo

No part of our body experiences death. Each part of our body always remains in either the visible or invisible state. To understand this better, let us take the example of Dihydrogen Oxide which can exists in the state of liquid - water, solid- ice and gas - vapour. No one can kill or destroy water element. We can transform liquid state of water into solid and gaseous states. In this way, whatever we refer to as death is in fact transformation of state of existence.

With the practice of Kriyayoga, one becomes master of practising conscious death (samadhi) and conscious rising from death. By the practice of the subtle technique of Kriyayoga, a practitioner is able to control the body by controlling the flow of life-force within it. According to necessity, the practitioner can channel the life-force towards the different parts of the body or withdraw it from all parts into the brain and spinal cord which lies within the cavity of head and spine. The practitioner can also direct the life-force from the lowest spinal plexus (mooladhaar chakra) to be merged into the Kutastha kendra (nucleus) found within the agya chakra plexus found in the posterior surface of the head hind part of brain which is known as medulla . Then, one can have complete control over life and death. A person who has attained control over life and death is a truly liberated person. St Paul, a great disciple of Jesus Christ, was having full command over life and death. He practised death daily, also known as Samadhi - the state where one realizes Blissful existence. St. Paul said, as quoted from The Bible: - "I protest by our rejoicing which I have in Christ, I die daily." (Corinthians 15:31)